



## इंसानों ने धरती से निकाल लिया 2150 गीगाटन पानी, होगा घातक

लंदन

साल 1993 से 2010 के बीच इंसानों ने जमीन के नीचे से करीब 2150 गीगाटन पानी पंप करके बाहर निकाल लिया। यह पानी इतना अधिक था कि इससे समुद्र का जलस्तर लगभग 6.24 मिलीमीटर तक बढ़ गया। यह कहना है सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी के मशहूर भू-वैज्ञानिकों की-वियोन सेओ का। रिसर्च कर रहे वैज्ञानिकों का कहना है कि पानी में अपना एक भारी वजन होता है। जब यह पानी जमीन के नीचे बने कुदरती एक्विफर्स में जमा था, तब तक धरती का संतुलन बिल्कुल परफेक्ट था। लेकिन इंसानों ने खेती की सिंचाई करने और अपनी बेहिसाब जरूरतों को पूरा करने के लिए इस पानी को खींचकर शहरों और खेतों में बहा दिया, जहां से यह आखिरकार समुद्र में जा मिलता। नासा के

वैज्ञानिकों ने इसे यांत्रिक भाषा में समझाते हुए कहा कि यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे आप किसी घूमते हुए लट्टू के एक हिस्से पर थोड़ा सा वजन बढ़ा दें या वहां से वजन हटा दें, तो वह लट्टू अजीब तरीके से डगमगाते लगता है। ठीक इसी तरह, जमीन से पानी निकालकर समुद्र में भेजने से पूरी पृथ्वी का संतुलन बिगड़ गया और उसका पूर्ण ध्रुव 31.5 इंच खिसक गया। वैज्ञानिकों के मुताबिक, हमारी पृथ्वी उसकी धुरी से तब सबसे भयावह तरीके से डिगती है, जब धरती के बीच वाले हिस्से (मध्य अक्षांश) में आने वाले देशों से पानी खींचा जाए। ऐसे हालातों में उसका सीधा और सबसे घातक असर पृथ्वी के घूमने की रफ्तार और उसके संतुलन पर पड़ता है। यह केवल धुरी खिसकने का ही मामला नहीं है, बल्कि इसके जो परिणाम अब सामने आने लगे

हैं, वे बेहद भयावह हैं। एक अध्ययन के मुताबिक, दुनिया के 40 सबसे बड़े नदी डेल्टा, जहां घनी आबादी रहती है, बहुत तेजी से नीचे की तरफ धंस रहे हैं। जमीन के नीचे से पानी का सपोर्ट खत्म होने की वजह से जमीन खोखली होकर नीचे की तरफ दब रही है। इससे भी बड़ा खतरा नेचर वाटर की एक नवीनतम वैश्विक तटीय रिपोर्ट में सामने आया है। दुनिया के 21 फीसदी तटीय इलाकों में भूजल का स्तर उड़ाने वाली तेजी से नीचे गिरा है। इसके चलते तटीय इलाकों के कुदरती वाटर टैंक में अब समुद्र का खारा और जहरीला पानी घुसने लगा है। इसका सीधा मतलब यह है कि आने वाले दिनों में करोड़ों लोगों के पीने का पानी कड़वा और जहरीला हो जाएगा। इसके अलावा, धरती की परतों में आ रहे इस असंतुलन की वजह से

भयानक भूकंप, भयंकर सूखा और बेमौसम तबाही मचाने वाली बाढ़ जैसी महाप्रलय का खतरा बढ़ गया है। वैज्ञानिकों के लिए भी पृथ्वी का यह डगमगाता एक अनसुलझी पहेली बना हुआ है। नासा के जेट प्रोपल्शन लैबोरेटरी के रिसर्च साइंटिस्ट सुरेंद्र अधिकारी का कहना है कि धुरी के खिसकने में केवल भूजल ही नहीं, बल्कि बर्फबारी के पैटर्न में बदलाव, ग्रीनलैंड की बर्फ का पिघलना और पृथ्वी के अंदरूनी हिस्सों में होने वाली हलचलें भी शामिल हैं। वैज्ञानिकों ने टीडब्ल्यूस्टोर और एमएल-टीडब्ल्यूआईएक्स जैसी नई तकनीकों के जरिए पिछले चार दशकों के पानी के डेटा का दोबारा विश्लेषण किया है, लेकिन फिर भी इस डरावने सच से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि इंसानों द्वारा निकाला गया पानी इस तबाही का सबसे बड़ा और मुख्य कारण है।

### न्यूज़बीफ

अमेरिका के मिसौरी में विमान हादसा, 12 लोगों की मौत



वाशिंगटन। अमेरिका के मिसौरी राज्य में एक छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें सवार सभी 12 लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार हादसा रिवियर को बटलर मेमोरियल एयरपोर्ट के निकट हुआ। मिसौरी स्टेट हाईवे पेट्रोल ने सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया कि विमान दुर्घटना की सूचना मिलते ही आपातकालीन दल मौके पर पहुंच गया। प्रारंभिक रिपोर्टों के आधार पर विमान में सवार सभी 12 लोगों के मारे जाने की आशंका जताई गई है। अधिकारियों के मुताबिक दुर्घटना बटलर मेमोरियल एयरपोर्ट के आसपास हुई। हादसे के कारणों का तत्काल पता नहीं चल सका है और जांच एजेंसियां दुर्घटना के पीछे की परिस्थितियों की पड़ताल कर रही हैं। बटलर शहर कैनसस सिटी से लगभग 60 मील दक्षिण में स्थित है। दुर्घटनास्थल को सुरक्षा घेरे में लेकर राहत एवं जांच कार्य शुरू कर दिया गया है। स्थानीय प्रशासन ने कहा है कि मृतकों की पहचान की प्रक्रिया जारी है और जांच पूरी होने के बाद हादसे के संबंध में विस्तृत जानकारी साझा की जाएगी। अमेरिकी विमान सुरक्षा एजेंसियों के विशेषज्ञ भी दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए घटनास्थल का निरीक्षण करेंगे।

अमेरिका में जो दवा 95,000 की थी, वो भारत से मात्र 2,377 रु. में मंगवाई, अमेरिकी हेल्थकेयर पर उठे सवाल



वाशिंगटन। अमेरिका की महंगी स्वास्थ्य व्यवस्था एक बार फिर दुनिया भर में चर्चा और विवादों के केंद्र में आई है। एक अमेरिकी महिला ने सोशल मीडिया पर वीडियो साझा कर दावा किया है कि जिस दवा के लिए उसे अमेरिका में 1000 डॉलर यानी लगभग 95,000 रुपये अपनी जेब से खर्च करने पड़े रहे थे, वही दवा भारत से सीधे मंगवाने पर उसे शिपिंग चार्ज सहित मात्र 25 डॉलर (करीब 2,377 रुपये) में मिल गई। इस चौंकाने वाले वाक्य के बाद महिला ने अमेरिकी स्वास्थ्य प्रणाली को खुलकर एक बड़ा स्कैम और टगी करार दिया है। सोशल मीडिया पर विक्टोरिया नाम की इस महिला का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह अमेरिकी हेल्थकेयर सिस्टम की विसंगतियों पर गंभीर सवाल उठा रही हैं। वीडियो में विक्टोरिया ने बताया कि उसे एक विशेष दवा के छह छोटे टेबलेट्स की जरूरत थी। चूकि उसकी अमेरिकी इश्योरेंस कंपनी इस दवा का खर्च उठाने से मना कर रही थी, इसलिए उसे इसके लिए 1000 डॉलर की भारी-भरकम राशि खुद चुकानी पड़ रही थी। इतनी बड़ी रकम खर्च करने के बजाय जब उसने अन्य विकल्पों की तलाश की, तो उसके डाक्टर ने ही उसे एक अमेरिकी सलाह दी। डाक्टर ने कहा कि वह अपना प्रिस्क्रिप्शन एक कनाडाई फार्मसी को भेजे, जो सीधे भारत से दवा निर्माताओं से संपर्क कर दवाई मंगवाती है। महिला ने डाक्टर की सलाह मानते हुए ऐसा ही किया। उसे लाघा था कि अंतरराष्ट्रीय शिपिंग के कारण शायद 100 या 200 डॉलर खर्च होंगे, लेकिन असली कीमत जानकर वह दंग रह गई। कनाडाई फार्मसी ने उसे बताया कि दवा की कुल लागत सिर्फ 25 डॉलर आएगी, जिसमें से दवा की वास्तविक कीमत मात्र 10 डॉलर (लगभग 950 रुपये) थी और बाकी के 15 डॉलर अंतरराष्ट्रीय शिपिंग चार्ज के थे।

नेपाल में राजदूत बनने का मौका, आम नागरिकों से मांगे गए आवेदन

काठमांडू। नेपाल की सरकार ने कूटनीतिक नियुक्तियों में पारदर्शिता और योग्यता आधारित चयन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने विभिन्न देशों में राजदूत पदों के लिए योग्य नागरिकों से सीधे आवेदन आमंत्रित किए हैं। इस पहल को देश की विदेश सेवा व्यवस्था में बड़े सुधार के रूप में देखा जा रहा है। नेपाल के विदेश मंत्रालय द्वारा जारी आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार इच्छुक उम्मीदवारों को निर्धारित पात्रता मानकों को पूरा करना होगा। सरकार ने चयन प्रक्रिया, योग्यता और आवेदन संबंधी शर्तों का विस्तृत दस्तावेज भी जारी किया है। कौन कर सकता है आवेदन राजदूत पद के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार का नेपाली नागरिक होना अनिवार्य है। न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता स्नातक निर्धारित की गई है, जबकि स्नातकोत्तर डिग्री धारकों को प्राथमिकता दी जाएगी। उम्मीदवारों की आयु कम से कम 35 वर्ष होनी चाहिए तथा उसके खिलाफ कोई गंभीर आपराधिक मामला या सजा नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा आवेदक के पास किसी विदेशी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। उम्मीदवारों को आवेदन में यह भी बताना होगा कि वे राजदूत पद के लिए स्वयं को क्यों उपयुक्त मानते हैं और चयनित होने पर नेपाल के राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए उनकी क्या रणनीति होगी।

## अमेरिका-ईरान ने किया शांति समझौता

### हरताक्षर शुक्रवार को स्विट्जरलैंड में

दोहा/वाशिंगटन/तेहरान

मध्य पूर्व में तनाव के बादल छंटने के दिन आ गए। 28 फरवरी से जंग का मैदान बन चुके होर्मुज जलडमरूमध्य में अब जहाजों की आवाजाही निर्बाध हो सकेगी। लंबी ना-नुकुर के बाद अमेरिका और ईरान ने सुलह कर ली है। वाशिंगटन और तेहरान ने शांति समझौते की पुष्टि की है। प्रमुख मध्यस्थ देश पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ का दृढ़ता से कहना है कि अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौता हो गया है और यही नहीं, यह अब लागू हो चुका है। समझौते पर हरताक्षर शुक्रवार को स्विट्जरलैंड में होंगे।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि ईरान के साथ समझौता हो गया उन्होंने होर्मुज जलडमरूमध्य में अमेरिका की नौसैनिक नाकाबंदी खत्म करने की घोषणा की है। ईरान के उप विदेश मंत्री काजिम गरीबाबादी ने कहा कि समझौते के अंतिम मसौदे पर दोनों पक्षों की सहमति हो गई है। अब लेबनान समेत सभी मोर्चों पर युद्ध खत्म हो जाएगा। ईरान की सेना ने कहा कि ईरानी लोगों ने साबित कर दिया है कि अमेरिका और इजराइल के पास हार मानने और आत्मसमर्पण करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

अमेरिकी हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स में माइनारिटी लीडर हकीम जेफरीज ने ईरान के साथ समझौते के बारे में ट्रंप की घोषणा पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने पहले ही ईरान के साथ एक समझौता किया था, जिसने 2015 में पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के कार्यकाल में उसके परमाणु कार्यक्रम को सीमित कर दिया था। उन्होंने एक्स पर लिखा, डोनाल्ड ट्रंप ने बिना सोचे-समझे उस समझौते को रद्द कर दिया और हमें युद्ध में धकेल दिया। अब गैस की कीमतें आसमान छू रही हैं। ईरान ज्यादा मजबूत हो गया है। यही ट्रंप का रिकार्ड है।

ट्रंप ने कहा कि अगर इस समझौते को पूरी तरह लागू किया जाता है तो यह उस संकट में एक बड़ा मोड़ साबित होगा जिसमें इजराइल, हिजबुल्लाह और क्षेत्र के अन्य पक्ष शामिल रहे हैं और जिसकी वजह से लेबनान, गाजा और समुद्री रास्तों पर लड़ाई फैल गई थी। अमेरिकी समाचार चैनल सीबीएस न्यूज का कहना है कि यह पुष्टि वाशिंगटन और तेहरान के बीच हफ्तों तक चले विरोधाभासी संकेतों के बाद आई है। दोनों पक्षों ने पहले प्रगति के संकेत तो दिए थे, लेकिन साथ ही किसी भी



अंतिम समझौते की मुख्य शर्तों पर असहमति भी जताई थी। क्षेत्र में तनाव अभी भी बना हुआ है। यह अभी साफ नहीं है कि जमीनी स्तर पर सहयोगी समूह इस कथित कामयाबी पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे।

इस बीच दुनिया भर के नेताओं ने सोमवार को इस शांति समझौते का स्वागत किया। इस समझौते की कतर, तुर्किये, ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस ने सराहना की। कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जसीम अल थानी ने एक्स पर लिखा, हम संयुक्त राज्य अमेरिका और इस्लामिक रिपब्लिक आफ ईरान के बीच हुए समझौता ज्ञापन का स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा कि कतर भविष्य की बातचीत के सकारात्मक और रचनात्मक भावना के साथ होने की उम्मीद करता है।

तुर्किये के राष्ट्रपति रसेप तैयप एर्दोगन ने कहा, मुझे पूरी उम्मीद है कि यह खबर, जिसकी पूरी दुनिया को लंबे समय से जरूरत थी, हमारे क्षेत्र में शांति और सुरक्षा का स्थायी माहौल बनाने का रास्ता साफ करेगी। उन्होंने उम्मीदवादी कार्रवाइयों से बचने की चेतावनी भी दी और कूटनीतिक प्रयासों का समर्थन करने के लिए पाकिस्तान, कतर और सऊदी अरब को धन्यवाद दिया।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कोर स्टार्मर ने इस समझौते को युद्ध खत्म करने, क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने और होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलने की दिशा में एक बेहद महत्वपूर्ण कदम बताया है। स्टार्मर ने कहा, मैं राष्ट्रपति ट्रंप और पाकिस्तान, कतर व अन्य देशों के उन मध्यस्थों को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस कामयाबी में योगदान दिया है। जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने भी इस समझौते का स्वागत किया है। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने समझौते को तेजी से लागू करने की उम्मीद जताई है। ट्रंप ने ट्विटर पर लिखा, इस्लामिक रिपब्लिक आफ ईरान के साथ समझौता अब पूरा हो गया है। सभी को बधाई। दुनिया भर के जहाजों, अपने इंजन चालू करो। तेल का प्रवाह शुरू होने दो। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शरीफ ने कहा है कि समझौते पर आधिकारिक हस्ताक्षर शुक्रवार (19 जून) को स्विट्जरलैंड में होंगे। उन्होंने कूटनीतिक प्रक्रिया में योगदान के लिए कतर, सऊदी अरब और तुर्किये का धन्यवाद किया। शरीफ के अनुसार, मध्यस्थ अब औपचारिक हस्ताक्षर से पहले कई बैठकें करावेंगे, ताकि तकनीकी बातचीत और समझौते को लागू करने की नींव रखी जा सके।

प्रधानमंत्री मोदी ने स्लोवाकिया में स्वागत की अमेरिकी परंपरा को सराहा



ब्रातिस्लावा (स्लोवाकिया)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक्स हैटल पर साझा एक तस्वीर में स्लोवाकिया में स्वागत की अमेरिकी परंपरा को सराहा है। उन्होंने लिखा, इस देश में स्वागत के दौरान पारंपरिक रूप से ब्रेड और नमक पेश किया गया। यह स्लोवाकिया की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सद्भावना व दोस्ती के उन मूल्यों की एक सुंदर झलक थी, जिन्हें वे बहुत महत्व देते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के एक्स हैटल की दूसरी पोस्ट में कहा गया, कल शाम ब्रातिस्लावा में मिला स्वागत सचमुच बहुत खास रहा। मैं भारतीय समुदाय के स्नेह और गर्मजोशी के लिए उनका आभारी हूँ। ऐसे भाव उन मजबूत रिश्तों को दर्शाते हैं जो हमारे लोगों को जोड़ते हैं और भारत-स्लोवाकिया की दोस्ती को और मजबूत बनाते हैं। उल्लेखनीय है प्रधानमंत्री मोदी फ्रांस की यात्रा के बाद यहां पहुंचे हैं।

## वैज्ञानिकों ने की 415 मिलियन साल पुराने खूंखार बिच्छू के जीवाश्म की खोज

लंदन

हाल ही में वैज्ञानिकों ने 415 मिलियन साल पुराने एक जीवाश्म की खोज की है। इस खोज ने पेलियोन्टोलॉजी के एक सदी पुराने रहस्य को सुलझा दिया है और यह भी बताया है कि आश्रिपोड्स ने इतने शक्तिशाली आकार में कैसे विकसित हुए। इस दानवाकार जीव का नाम प्रिप्रेक्टुरस गिगास है, और यह उस समय पृथ्वी पर मौजूद था जब अन्य जीव बहुत छोटे हुआ करते थे। इसकी लंबाई लगभग 3.3 फीट यानी करीब एक मीटर थी, और इसके डंक 6.2 इंच लंबे व बेहद खतरनाक थे। यह बिच्छू जमीन के साथ-साथ पानी में भी अपना शिकार खोजता था, जिससे इसकी शिकार करने की क्षमता और भी बढ़ जाती थी। प्रिप्रेक्टुरस गिगास के अवशेष पहली बार 1870 के दशक में इंग्लैंड और वेल्स में मिले थे। लेकिन पेलियोन्टोलॉजिस्ट्स लंबे समय तक इस जीव की वास्तविक पहचान को लेकर असमंजस में थे। मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के

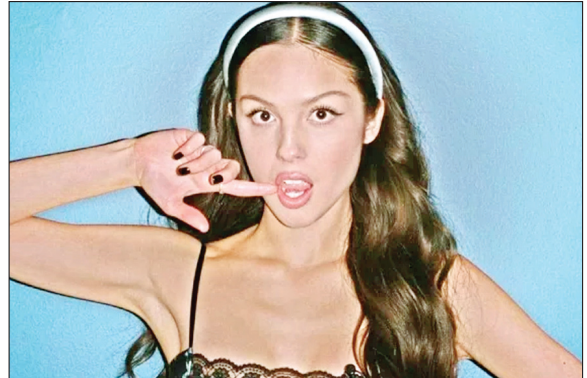


पेलियोन्टोलॉजिस्ट रसेल गारवुड ने बताया, प्रिप्रेक्टुरस ने एक सदी से भी अधिक समय तक हम पेलियोन्टोलॉजिस्ट्स को हैरान किया है। शुरुआत में शोधकर्ताओं को लगा कि यह एक बड़ा

क्रस्टेशियन है। फिर 1980 के दशक में कुछ शोधों ने इसे बिच्छू बताया। लेकिन जीवाश्म के टुकड़े बहुत छोटे थे और बिच्छू की विशिष्ट पूंछ भी गायब थी, जिससे उस समय इस सिद्धांत को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया गया। नई स्टडी ने इस पुरानी बहस को आखिरकार खत्म कर दिया है। लंदन के नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम के शोधकर्ताओं ने आधुनिक इमेर्जिंग और एनालिसिस तकनीकों का उपयोग किया। उन्होंने प्रिप्रेक्टुरस गिगास के खाल जीवाश्मों की दोबारा जांच की और उनकी पहचान पहले से मौजूद प्रागैतिहासिक जीवों और पहचाने गए बिच्छूओं के जीवाश्मों से की। इस गहन विश्लेषण से यह साफ हो गया कि प्रिप्रेक्टुरस गिगास वास्तव में एक बिच्छू ही है। नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम के रिचर्ड हावर्ड ने बताया, यह पुष्टि करना कि यह जीव एक बिच्छू है, हमारी समझ को पूरी तरह से बदल देता है। यह विशाल बिच्छू उस समय पृथ्वी पर था जब जंगलों जैसे जटिल इकोसिस्टम का विकास नहीं हुआ था। इंग्लैंड वैज्ञानिकों का मानना है कि यह जमीन आंशिक रूप से पानी में रहता होगा। जीवाश्म में एपिमेरो नामक फ्लैप जैसे स्ट्रक्चर मिले हैं, जो लाबस्टर और केकड़ों के ऊपरी कवच की तरह काम करते थे।

रिचर्ड हावर्ड ने कहा, जमीन पर प्रिप्रेक्टुरस को सपोर्ट करने वाले जटिल इकोसिस्टम के बिना, इन जानवरों ने शायद अपनी जिनगी का कुछ हिस्सा पानी में शिकार करते हुए बिताया होगा। पानी में रहने की वजह से ही इसे अपने विशाल शरीर को संभालने में मदद मिली होगी और इसने दोनों ही वातावरण में अपनी बादशाहत कायम रखी। 415 मिलियन साल पहले पृथ्वी पर मौजूद अन्य आश्रिपोड्स, जैसे कीड़े और मकड़ियाँ, बहुत छोटे हुआ करते थे। ऐसे में यह बिच्छू अपने समय का सबसे बड़ा और खतरनाक शिकारी बन गया। इसकी एक बड़ी वजह यह भी थी कि इसे टक्कर देने वाला कोई दूसरा बड़ा शिकारी मौजूद नहीं था। पानी और जमीन दोनों जगह इसकी बादशाहत थी, जिससे यह अपने शिकार को पूरी तरह हावी रहता था। रसेल गारवुड ने बताया, प्रिप्रेक्टुरस को जो चीज इतनी दिलचस्प बनाती है, वह यह है कि यह उस समय विशाल हो गया जब जमीन पर जीवन बहुत छोटा था।

## लंदन का मौसम बढ़ाता है मेरी क्रिएटिविटी को : ओलिविया



लास एंजेलस

हाल ही में अमेरिकी गायिका और गीतकार ओलिविया रोड्रिगो ने अपनी निजी जिंदगी और आगामी एल्बम से जुड़ी कई दिलचस्प बातें साझा कीं। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि लंदन उनके लिए एक ऐसी जगह है जहां वह खुद को अपने सबसे बेहतर रूप में पाती हैं।

ओलिविया ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, जब भी मैं लंदन में होती हूँ, मुझे लगता है कि मैं खुद का सबसे बेहतर वर्जन बन जाती हूँ। इस शहर का माहौल, इसकी गहरी संस्कृति और यहां का जीवन एक अलग ही ऊर्जा प्रदान करता है, जो मेरी रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके नए एल्बम यू सी प्रिटी सैड फार ए गर्ल सो इन लव का एक बड़ा हिस्सा लंदन में ही लिखा गया है। यह एल्बम उस विशेष समय और वहां बिताए अनुभवों से गहराई से प्रेरित है, जिसने उनके संगीत को एक नई दिशा दी। ओलिविया ने लंदन के मौसम का भी अपनी रचनात्मक प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रकृत किया।

उन्होंने कहा, लंदन का मौसम भी मेरी क्रिएटिविटी को बढ़ाता है। यहां इतनी बारिश होती है कि लोग बाहर जाने के बजाय घर के अंदर बैठकर गिटार बजाते हैं और गाने लिखते हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। बारिश भरे दिनों में मुझे अपने विचारों और भावनाओं के साथ समय बिताने का मौका मिलता है, जिससे नए गीत और धुनें बनती हैं। सिर्फ लंदन ही नहीं, बल्कि इंग्लैंड का मैनचेस्टर शहर भी उन्हें काफी प्रेरित करता है। ओलिविया ने बताया कि कुछ साल पहले उन्होंने मैनचेस्टर में भी समय बिताया था और वहां का अनुभव उनके लिए यादगार रहा, क्योंकि उस शहर का भी एक समृद्ध संगीत इतिहास रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मैनचेस्टर दुनिया के कई महान शहरों में से एक है और यहां से संगीत की दुनिया को कई ऐसे कलाकार मिले हैं, जिन्होंने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

अपने नए एल्बम की रिलीज टाइमलाइन के बारे में बात करते हुए ओलिविया ने बताया, शुरुआत में मेरा प्लान इसे साल की शुरुआत में रिलीज करने का था। मैंने सोचा था कि फरवरी में पहला सिंगल रिलीज करूंगी और जून तक पूरा एल्बम दर्शकों के सामने आ जाएगा। लेकिन समय के साथ मुझे महसूस हुआ कि कुछ चीजों को और बेहतर बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, एक अच्छा एल्बम तैयार करने में काफी समय लगता है।

## पीओके में प्रदर्शन से हिली पाक सरकार, सेना घरों में घुस कर लोगों को जबरन उठा रही

जेएएसी के प्रमुख नेता ने आडियो मैसेज जारी कर मानवाधिकार संस्थानों से मांगी मदद

कराची

पाकिस्तान के कब्जे वाले पीओके में जाईंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएससी) के प्रमुख नेता शौकत नवाज मीर ने छिपे हुए टिकाने से एक आडियो मैसेज जारी किया है। इसमें उन्होंने पाकिस्तान की सेना और सुरक्षा एजेंसियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। मीर का दावा है कि आंदोलन को कुचलने के लिए पूरे इलाके में दमन का बड़ा अभियान चलाया जा रहा है। शौकत नवाज मीर ने स्थानीय लोगों, विदेशों में रह रहे कश्मीरी समुदाय और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थानों से मदद की अपील की है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने आरोप लगाया कि पाकिस्तान का सुरक्षा ढांचा और सैन्य प्रतिष्ठान आंदोलन को खत्म करने के लिए संचरनात्मक आतंक और व्यापक हिंसा का सहारा ले रहा है। मीर के मुताबिक सुरक्षा एजेंसियां जेएएससी की कोर कमेटी के सदस्यों के साथ-साथ उन परिवारों को भी निशाना बना रही हैं, जिन्होंने आंदोलन को आर्थिक या सार्वजनिक समर्थन



दिया है। उन्होंने दावा किया कि रात के अंधेरे में घरों पर छापे मारे जा रहे हैं, संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जा रहा है और महिलाओं के साथ अश्लील व्यवहार किया जा रहा है। आडियो संदेश में उन्होंने कहा कि कई कार्यकर्ताओं को बिना किसी स्पष्ट प्रक्रिया के हिरासत में लिया गया है, जबकि बड़ी संख्या में लोगों को जबरन गायब कर दिया गया है।

परिवारों को उनके टिकाने और सुरक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं दी जा रही। मीर ने पीओके की मौजूदा स्थिति को मानवीय संकट बताया। उनका दावा है कि कोटली, नीलम और

रावलकोट जैसे इलाकों में हालिया झड़पों में कई स्थानीय लोगों की मौत हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि अर्धसैनिक बलों को सार्वजनिक स्थानों पर जुटने वाले लोगों के खिलाफ सीधे घातक बल प्रयोग करने की छूट दी गई है। इस बीच सीमा क्षेत्र की निगरानी कर रहे शीर्ष खुफिया सूत्रों ने बताया कि हालात ने एक बार फिर दिखा दिया है कि इस इलाके में रजसामाबाद का सीधा और पूर्ण नियंत्रण है। पंजाब रेंजर्स और फेडरल काउन्टरबुलरी जैसे भारी हथियारों से लैस बलों की तैनाती के साथ-साथ संचार और इंटरनेट सेवाओं पर बैन लगाया गया है।